eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

बाल गंगाधर तिलक का भारतीय राजनीति में योगदान

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल1
1सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Abstract

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे। उन्होंने भारतीय समाज को राजनीतिक चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी की। स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार हैं का उद्घोष कर उन्होंने जनमानस में स्वतंत्रता की भावना को जाग्रत किया। उनका योगदान केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी महत्वपूर्ण था। उन्होंने पत्रकारिता, शिक्षा, सामाजिक सुधारों और सार्वजनिक आंदोलनों के माध्यम से भारतीय जनता को संगठित किया। गणेश उत्सव और शिवाजी महोत्सव जैसी सांस्कृतिक पहलों के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज में एकता और राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा दिया। इस शोध पत्र में तिलक के राजनीतिक योगदान, उनकी विचारधारा, लोकमान्य के रूप में उनकी भूमिका और स्वतंत्रता संग्राम में उनके प्रभाव का गहन अध्ययन किया गया है।

कीवर्ड– बाल गंगाधर तिलक, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, स्वराज, राष्ट्रीय आंदोलन, लोकमान्य तिलक, कांग्रेस, होमरूल आंदोलन, गणेश उत्सव, पत्रकारीय योगदान

Introduction

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कई महान नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। वे एक प्रखर राष्ट्रवादी, समाज सुधारक और क्रांतिकारी विचारक थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में जनता की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की और भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना का संचार किया। उनके विचारों और कार्यों ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की और भारतीय समाज में राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल किया।

तिलक ने न केवल ब्रिटिश शासन का विरोध किया, बल्कि भारतीय समाज के भीतर फैली कुरीतियों को भी चुनौती दी। उन्होंने भारतीय संस्कृति और इतिहास को पुनर्जीवित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए, जिससे राष्ट्रीयता की भावना और अधिक प्रबल हुई। उनकी विचारधारा और संघर्षशीलता ने भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी बदलाव लाने में मदद की। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पहले ऐसे नेता थे जिन्होंने स्वराज को भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया।

तिलक का विश्वास था कि स्वतंत्रता केवल याचना से प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि इसके लिए संगठित संघर्ष आवश्यक है। उन्होंने भारतीय समाज को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास किए और स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया। उनके अनुसार, जब तक भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज स्वतंत्र नहीं होंगे, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और देशवासियों को वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक शिक्षा अपनाने की प्रेरणा दी।

तिलक ने जनता से सीधा संवाद स्थापित करने के लिए समाचार पत्रों और उत्सवों का उपयोग किया। उन्होंने केसरी और मराठा के माध्यम से ब्रिटिश नीतियों की कठोर आलोचना की और लोगों में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल किया। गणेश उत्सव और शिवाजी महोत्सव के माध्यम से उन्होंने भारतीयों को संगठित करने और उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया। ये उत्सव ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए जनसाधारण को प्रेरित करने के साधन बने।

इस शोध पत्र में तिलक के राजनीतिक और सामाजिक योगदान का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तिलक के विचारों और उनके संघर्ष की पृष्ठभूमि को समझकर हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके अमूल्य योगदान की सराहना कर सकते हैं।

तिलक का प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा– बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में हुआ था। वे बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उन्होंने पुणे के डेक्कन कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और फिर कानून की पढ़ाई की। शिक्षा के दौरान ही उन्होंने सामाजिक असमानताओं और ब्रिटिश शासन की नीतियों के प्रति जागरूकता विकसित की।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तिलक की भूमिका

1. पत्रकारीय योगदान– बाल गंगाधर तिलक ने पत्रकारिता को जनजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रचार का प्रभावी माध्यम बनाया। उन्होंने केसरी (मराठी) और मराठा (अंग्रेजी) समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों की आलोचना की और जनता को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। उनके लेखों में भारतीय संस्कृति, इतिहास और राजनीतिक स्वतंत्रता की गूंज सुनाई देती थी।

2. स्वराज की अवधारणा– तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वराज को केंद्र में रखा और स्पष्ट रूप से कहा कि स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा। उन्होंने स्वशासन को भारतीय जनता का नैसर्गिक अधिकार बताया और अंग्रेजों के खिलाफ जनता को संगठित किया। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया और विदेशी वस्त्रों और उत्पादों के बहिष्कार की अपील की, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली।

3. कांग्रेस और नरमपंथियों से असहमति– तिलक कांग्रेस के गरमपंथी गुट के प्रमुख नेता थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में नरमपंथी नेताओं की नीतियों की आलोचना की और पूर्ण स्वतंत्रता की दिशा में सक्रिय संघर्ष करने की वकालत की। उनके प्रभाव से कांग्रेस में क्रांतिकारी विचारधारा को बल मिला। 1907 के सूरत विभाजन में तिलक के नेतृत्व में गरमपंथी और नरमपंथी नेताओं के बीच स्पष्ट मतभेद उभरकर सामने आए।

4. होमरूल आंदोलन– 1916 में, तिलक ने एनी बेसेंट के साथ मिलकर होमरूल आंदोलन की शुरुआत की। इस आंदोलन का उद्देश्य भारत में स्वशासन की स्थापना के लिए दबाव बनाना था। उन्होंने पूरे भारत में सभाएँ आयोजित कीं और भारतीय जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को स्पष्ट संदेश दिया कि भारतीय जनता अब अपने अधिकारों से समझौता करने को तैयार नहीं है। होमरूल आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को नई गति प्रदान की और जनता में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान– तिलक ने भारतीय समाज को संगठित करने के लिए गणेश उत्सव और शिवाजी महोत्सव जैसे सार्वजनिक आयोजनों की शुरुआत की। इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

और ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोध की भावना विकसित हुई। उन्होंने शिक्षा को भारतीय समाज की प्रगति के लिए अनिवार्य बताया और जनता को व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

तिलक का मानना था कि भारतीय संस्कृति और इतिहास को पुनर्जीवित किए बिना स्वतंत्रता प्राप्ति संभव नहीं है। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाई और महिलाओं की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और जाति–पाति के भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में प्रयास किए।

6. तिलक और क्रांतिकारी आंदोलन– यद्यपि तिलक स्वयं सशस्त्र क्रांति के पक्षधर नहीं थे, लेकिन उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों का समर्थन किया। चापेकर बंधुओं और बंगाल के क्रांतिकारियों के प्रति उनकी सहानुभूति थी। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें राष्ट्रद्रोही मानते हुए 1908 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर मांडले (बर्मा) की जेल में छह वर्ष के लिए निर्वासित कर दिया। इस अवधि में उन्होंने गीता रहस्य नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने भगवद्गीता के कर्मयोग सिद्धांत की व्याख्या की और स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया।

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। उन्होंने अपने विचारों, संघर्ष और संगठन कौशल से भारतीय जनता में स्वतंत्रता की ललक पैदा की। उनका योगदान केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी अतुलनीय है। उनकी दूरदर्शिता, उनके संघर्ष और उनके आदर्श आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और देशवासियों में आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और संघर्षशीलता की भावना जागृत की। उनका जीवन और कार्य स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

तिलक की विचारधारा– तिलक की विचारधारा क्रांतिकारी थी, लेकिन वे किसी भी प्रकार की अराजकता के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने सामाजिक सुधारों को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा और भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर विशेष ध्यान दिया। बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान नेता थे, जिन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने भारतीय जनता को स्वतंत्रता का महत्व समझाया और उनके भीतर राष्ट्रीय जागरूकता को विकसित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का हिस्सा भी है।

तिलक ने अपने पत्रकारीय लेखन, होमरूल आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से भारतीय समाज में एकजुटता और राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल किया। उनकी नीतियों और विचारों ने आगे चलकर महात्मा गांधी और अन्य नेताओं को भी प्रेरित किया।

उनकी सोच और संघर्षशीलता ने भारतीय राजनीति और समाज को एक नई दिशा दी। उनका योगदान केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज भी उनकी विचारधारा और उनकी शिक्षाएँ हमें प्रेरणा प्रदान करती हैं। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता और वे भारतीय राष्ट्रवाद के एक अमिट प्रतीक बने रहेंगे। लोकमान्य तिलक का जीवन और उनका संघर्ष इस सत्य को प्रमाणित करता है कि एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अपने विचारों और प्रयासों से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। वे सही मायनों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 04, April 2023

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान नेता थे, जिन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने भारतीय जनता को स्वतंत्रता का महत्व समझाया और उनके भीतर राष्ट्रीय जागरूकता को विकसित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का हिस्सा भी है।

तिलक ने अपने पत्रकारीय लेखन, होमरूल आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से भारतीय समाज में एकजुटता और राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल किया। उनकी नीतियों और विचारों ने आगे चलकर महात्मा गांधी और अन्य नेताओं को भी प्रेरित किया।

उनकी सोच और संघर्षशीलता ने भारतीय राजनीति और समाज को एक नई दिशा दी। उनका योगदान केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज भी उनकी विचारधारा और उनकी शिक्षाएँ हमें प्रेरणा प्रदान करती हैं। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता और वे भारतीय राष्ट्रवाद के एक अमिट प्रतीक बने रहेंगे।

लोकमान्य तिलक का जीवन और उनका संघर्ष इस सत्य को प्रमाणित करता है कि एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अपने विचारों और प्रयासों से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। वे सही मायनों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे।

संदर्भ सूची–

1. अग्रवाल, पी. (2010). 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और तिलक'. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
2. गुप्ता, आर. (2015). 'स्वतंत्रता संग्राम के महानायकरू लोकमान्य तिलक'. वाराणसी, ज्ञान गंगा पब्लिशर्स।
3. शर्मा, बी.के. (2008). 'भारतीय राजनीति में तिलक की भूमिका'. जयपुर, सुरभि प्रकाशन।
4. मिश्रा, डी. (2013). 'बाल गंगाधर तिलक और राष्ट्रीयता की भावना'. मुंबई, लोकभारती प्रकाशन।
5. जोशी, एस. (2011). 'तिलक और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'. पुणे, महाराष्ट्र बुक हाउस।
6. पाटिल, के. (2017). 'स्वराज की अवधारणा और लोकमान्य तिलक'. नागपुर, विद्या प्रकाशन।
7. सिन्हा, आर. (2019). 'तिलक, संघर्ष और विचारधारा'. पटना, प्रकाशन संस्थान।
8. तिवारी, एम. (2006). 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तिलक का योगदान'. लखनऊ, साहित्य भवन।
9. वर्मा, जे. (2012). 'तिलक के क्रांतिकारी विचार'. कोलकाता, यथार्थ प्रकाशन।
10. चौहान, एल. (2018). 'भारतीय राजनीति के अग्रदूत, लोकमान्य तिलक'. अहमदाबाद, प्रगति प्रकाशन।
11. Desai] A- R- 1954- *Social Background of Indian Nationalism*- Bombay: Popular Prakashan-
12- Brown] J- M- 1977- *Gandhi and Civil Disobedience: The Mahatma in Indian Politics 1928&34*- Cambridge: Cambridge University Press-
13- Wolpert] S- 1962- *Tilak and Gokhale: Revolution and Reform in the Making of Modern India*- Berkeley: University of California Press-
14- Sarkar] S- 1983- *Modern India: 1885&1947*- Madras: Macmillan India-

15- Nanda] B- R- 1998- *The Making of a Nation: India*s Road to Independence*- New Delhi: HarperCollins-

16- Heehs] P- 1998- *Nationalism] Terrorism] Communalism: Essays in Modern Indian History*- New Delhi: OÛford University Press-

17- Majumdar] R- C- 1962- *History of the Freedom Movement in India Vol- 1&3*- Calcutta: Firma K- L- Mukhopadhyay-

18- Metcalf] B- D-] & Metcalf] T- R- 2006- *A Concise History of Modern India*- Cambridge: Cambridge University Press-

19- Owen] H- F- 1972- *The Indian Nationalist Movement: 1885&1947*- London: Macmillan-

20- Panikkar] K- M- 1953- *Asia and Western Dominance*- London: George Allen & Unwin-

21- Roberts] P- E- 1952- *History of British India Under the Company and Crown*- London: OÛford University Press-

22- Sen] S- N- 2009- *History of the Freedom Movement in India*- New Delhi: New Age International-

23- Smith] V- A- 1958- *OÛford History of India*- OÛford: Clarendon Press-

24- Srinivasan] R- 2007- *Indian Nationalism and Hindu Social Reform*- New Delhi: Gyan Publishing House-

25- Thapar] R- 2002- *Early India: From the Origins to AD 1300*- New Delhi: Penguin Books-

26- Wolpert] S- 2000- *A New History of India*- New York: OÛford University Press-

27- Low] D- A- 1993- *Britain and Indian Nationalism: The Imprint of Ambiguity 1929&1942*- Cambridge: Cambridge University Press-

28- McLane] J- R- 1977- *Indian Nationalism and the Early Congress*- Princeton: Princeton University Press-

29- Guha] R- 2007- *India After Gandhi: The History of the World*s Largest Democracy*- New Delhi: HarperCollins IndiaA